॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

237

महाकविश्रीमदम्बिकादत्तव्यासप्रणीतः

शिवराजविजयः

(ऐतिहासिकोपन्यासः)

'अर्चना'-संस्कृत-हिन्दीव्याख्याद्वयोपेतः

(प्रथमो विरामः • 1-4 निश्वासः)

व्याख्याकारः

डॉ० रमाशङ्कर मिश्र

वाचस्पति (डी० लिट्०)

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

भूमिका

मानव संवेदनशील प्राणी है। उसके आस-पास का वातावरण एवं परिस्थितियाँ उसके मानस को प्रभावित करके भावों तथा विचारों को जन्म देती हैं, जिन्हें वह शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। सामान्य जन किसी बात को साधारण से कह देता है, परन्तु कवि निजवैशिष्ट्य और प्रतिभा के कारण उस कथन को इस रूप में संप्रस्तुत करता है कि उसका प्रभाव श्रोता या दर्शक या पाठक पर तत्क्षण होता है। उसके शब्द-चयन में चमत्कार तथा अद्भुत विलक्षणता होती है। कवि प्रजापति है, संसार का निर्माण करने वाला है। कवि की रुचि के अनुकूल ही उसकी सृष्टि बन जाती है। यथा—

अपारे काव्यसंसारे कविरेव प्रजापतिः।
यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते॥

(अग्निपुराण-३३६.१०)

'काव्य' शब्द का सम्बन्ध 'कवि' शब्द से है। व्याकरण की दृष्टि से कवि का भाव या कर्म ही काव्य कहलाने का अधिकारी है—'कवेरिदं कर्म भावो वा काव्यम्'। कवि शब्द भारतीय साहित्य में बड़ा ही व्यापक अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। निरुक्तकार महर्षि यास्क ने 'कवयः क्रान्तदर्शिनः' कहकर सुस्पष्ट क्रान्तदर्शी के रूप में स्मरण किया है। 'कवयोऽप्यत्र मोहिताः' (गीता-४.१६); 'संन्यासं कवयो विदुः' (गीता-१६.२) आदि रूप से उल्लेख कर गीता में इसे विशेषवेत्ता के रूप में स्मरण किया गया है। अमरकोषकार ने 'सङ्ख्यावान् पण्डितः कविः' लिखकर कवि को पण्डित के रूप में जाना है।

भारतीय परम्परा के अनुसार सभी विद्याओं के मूल स्रोत वेद हैं। सभी की उत्पत्ति और विकास के मूल तत्त्वों का अनुसन्धान वेद में ही किया जाता है। आधुनिक पाश्चात्य विद्वानों ने भी ऋग्वेद को ही विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ स्वीकार किया है।